B.A. Part-I (H)
Paper-I
Political Science

Date- 22/04/2021

राजनीतिक सिद्धांत की अवधारणा का विकास →

राजनीतिक सिद्धांत विकास का प्रतिफल है जिस गति से मानव में राजनीतिक चेतना का विकास होता है उसी गति के स्वरूप से प्रकृति, उद्देश्यों में भी परिवर्तन होता गया।

अध्ययन के सुविधा के लिए राजनीतिक सिद्धांतों के बदलते स्वरूप के संदर्भ में दो दृष्टिकोण रखें जा सकते है

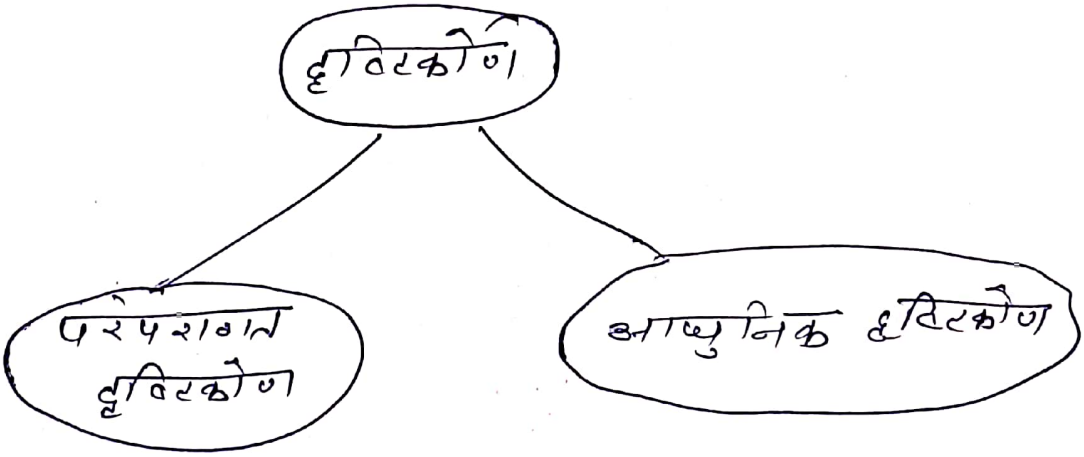

* परंपरागत दृष्टिकोण →

परंपरागत दृष्टिकोण मानकीय मूल्यों को व्याख्या दार्शनिक आधार पर करता है इसके विश्लेषण का आधार संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था और मानवीय जीवन के तमाम पक्ष निहित है।

Scanned with CamScanner

* **आधुनिक दृष्टिकोण** →

आधुनिक दृष्टिकोण ने व्यवहारवाद पर ज्यादा जोर दिया है।

स्पष्ट है कि परम्परागत सिद्धांत के द्वारा राज्य के औपचारिक और संस्थागत पहलू पर ज्यादा बल दिया जाता है लेकिन आधुनिक वैज्ञानिकों और आधुनिक दृष्टिकोण ने अनुभववाद, व्यवहारवाद और अनौपचारिक पद्धति तथा वैज्ञानिक पद्धति पर बल देते हैं

राजनीतिक सिद्धांत के क्षेत्र एवं उद्देश्य →

राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति →
(The Nature of Political Theory)

राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति एवं क्षेत्र में परिवर्तन होता रहा है वर्तमान समय में लोककल्याणकारी राज्यों की स्थापना के कारण राज्य के कार्यक्षेत्र में अपार वृद्धि हुई है बदले राजनीति सिद्धांत के प्रकृति और क्षेत्र में परिवर्तन हुआ है राजनीतिक विज्ञान का केन्द्रीय विषय-वस्तु राज्य के बदलते हुए अवधारणा के साथ-साथ राजनीतिक चिंतकों की अध्ययन पद्धति में भी बदलाव आया है

Scanned with CamScanner

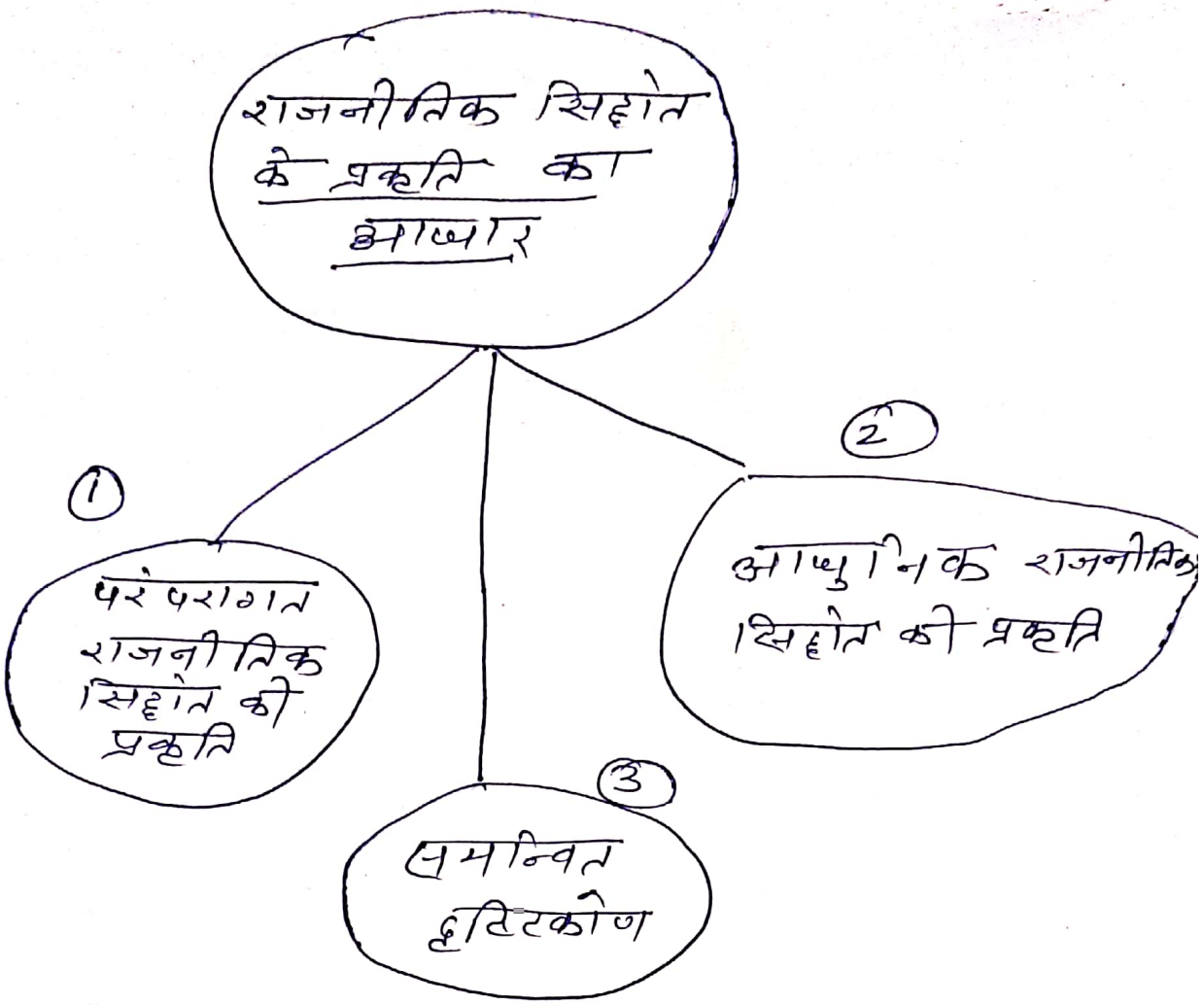

(1) परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति ⇒

परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत मुख्यतः मूल्यों एवं लक्ष्यों से जुड़ा हुआ है इसके विषयों के अंतर्गत राज्य व सरकार को उत्पत्ति, विकास, संगठन, प्रकार आदि राजनीतिक दल, राजनीतिक विचारधाराएँ, प्रमुख सरकारों और संविधानों का तुलनात्मक अध्ययन, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, राष्ट्रीय प्रशासन आदि है।

शेष अगले क्लास में--

Scanned with CamScanner